International Journal of History 2020; 2(2): 34-37

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(2): 34-37
Received: 20-05-2020
Accepted: 28-08-2020

अजंना यादव
शोध–छात्रा
इतिहास विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा,
भारत

Corresponding Author:
अजंना यादव
शोध–छात्रा
इतिहास विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा,
भारत

बारह पंथी : एक एतिहासिक विवेचन

अजंना यादव

सारांश
'बारह पंथी' नाथ पंथ की 12 शाखाएं हैं। नाथ पथ प्राचीन संत सम्प्रदाय है। नाथ पंथ का उद्भव आदि देव शिव से माना जाता है। नाथ नंथ के अनुयायी शिव की अराधना करते हैं। इनके साधना पद्धति हठयोग पर आधारित है। आत्म साक्षात्कार तथा समाज कल्याण नाथ पथियों का मुख्य ध्येय हैं।
गोरखनाथ जी ने कर सभी भौव सम्प्रदायों को संगठित कर उस समय उन्होंने नाथ सम्प्रदाय को बारह शाखाओं में बांट दिया। प्रत्येक शाखा का अपना महात्मा तथा अपना स्थान होता है। वह स्थान उनका तीर्थ तथा महात्मा को आदि प्रर्वतक मानकर उसकी पूजा करते है। बारहपंथी शाखाओं में 6 शिव तथा 6 गोरखनाथ से सम्बन्धित नाथ पंथ से सम्बन्धित रखते हैं।
ये बारह पंथी भााखाएं सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैली हुई है।

मुख्य शब्दः बाहरपंथी नाथ पंथ, शिव, गोरख

प्रस्तावना
हठ प्रदीपिका के लेखक स्वात्माराम और प्रथम टीकाकार ब्रह्मानन्द इन दोनों ने ही दृढ़ प्रदिपिका ज्योत्सना के पहले उपदेश के 5 से 9वे भलोक मे 44 सिद्ध नाथ योगियों का उल्लेख किया हुआ है। इन 33 नाथ योगियों में पहलानाथ आदि नाथ को माना गया है। ये आदिनाथ स्वयं शिव है। प्रथम नाथ आदिनाथ शिव ने ही हठयोग की विधा प्रदान की थी ऐसा इस नाथ ग्रन्थ में उल्लेख किया गया है।
नाथसिद्धों का उल्लेख आर्युवेद ग्रन्थों में भी मिलता है। आर्युवेद ग्रन्थ नाथों को रसायन चिकित्सा के उत्पति करता के रूप में वर्णित करता है।
तंत्र ग्रन्थ शावर तंत्र में कपलिकों के 13 आचार्यो का उल्लेख मिलता है।
पोडस नित्यातंत्र में नक्नाथों का उल्लेख किया जिसमें इनको तंत्र के प्रचारक के रूप में स्थापित किया गया है।

बारह पंथी : एक एतिहासिक विवेचन एवं COVID - 19
"बारह पंथी", नाथ सम्प्रदाय की बारह शाखाओं को बारह पंथी कहा जाता है। एसी मान्यता है कि जब गोरखनाथ जी ने नाथ पंथ को संगठित किया तो उन्होंने नाथ पंथ की बारह शाखाएँ स्थापित की थी और ये बारह शाखाएँ ही बारह पंथ कहलाती है।
गोरखनाथ जी ने जो 12 शाखाएं स्थापित की थी उन्हें इस प्रकार देखा जा सकता हैः–

1. सत्यनाथी
2. धर्मनाथी
3. बैराग
4. माननाथी
5. कन्हड
6. धनपंथ
7. रामपंथ
8. आईपंथ
9. नटेश्वरी
10. पागलपंथ
11. कपिलानी
12. गंगानाथी

इन बारह पंथ की प्रचलित परिपटियोंमें कोई भेद नहीं है।
नाथ पंथ एक शैव संत संप्रदाय है। यह संप्रदाय शिव की उपासना करता है। नाथपंथी शिव के वंशज माने जाते हैं।नाथ पंथ उतना ही प्राचीन है जितना शिव प्राचीन है। आदिनाथ शिव की आराधना करना ही, नाथ पंथ की प्राचीनता की पुष्टि है। स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि नाथ पंथ बहुत ही अनादि काल से विद्यमान था। आदिनाथ शिव के बाद मत्स्येंद्रनाथ हुए। मत्स्येन्द्रनाथ के बारे में ऐसी मान्यता है कि जब आदिनाथ शिव पार्वती को योग ज्ञान दे रहे थे तो समुद्र में एक मछली थी और उस मछली से यह उत्पन्न हुए इन्होंने मछली के पेट में रहते हुए भी योग ज्ञान की शिक्षा ग्रहण की थी इसलिए यह मत्स्येन्द्र नाथ कहलाए। मत्स्येन्द्रनाथ सिद्ध योगी हुए। मत्स्येन्द्रनाथ जी ने गोरखनाथ जी को अपना शिष्य बनाया। मत्स्येन्द्रनाथ चूंकि शिव अवतार माने गए तो उन्होंने यह पहचाना कि गोरखनाथ ही नाथ पंथ का प्रवर्तन करेंगे और इस परम्परा को विश्व में फैलाएँगे। वहीं हुआ गोरखनाथ जी ने तत्कालीन समाज में जो बुराईयॉ, कुरितियाँ, व्यापत हो चुकी थी उन पर प्रहार किया विभिन्न सम्प्रदायों की अच्छी शिक्षाओं को अपनाया और नाथ पंथ का प्रवर्तन किया। आदि काशीनाथ पंथ का प्रवर्तन तथा संगठन कार्य करते गए और कालान्तरमें गोरखनाथ जी को ही नाथ पंथ का संस्थापक मान लिया। गया। इस बात की पुष्टि कि मत्स्येन्द्रनाथ ने गोरखनाथ को शिव अवतारी बताया और अपने शिष्य के रूप में उनको दिक्षा दी विभिन्नग्रंथों से होती है। गोरखनाथ कथा, पुराण (पदम् स्कन्द शिव ब्रह्माण्ड), तांत्रिक ग्रंथ (तन्त्र महापर्व) उपनिषद (वृहदारण्यक) एवं अन्य प्राचीन ग्रंथ करते हैं।

बारह पंथियों का इतिहास

नाथ पंथियों को बारहपंथी योगी कहने का आधारयही है कि यह नाथ पंथ संगठित करते समय गोरखनाथ ने 12 शाखाओं में विभक्त कर दिया था। प्रत्येक पंथ का अपना एक विशेष स्थान तथा महात्मा होता है जिस संबंधित पंथ वाले अपना तीर्थ और आदि प्रवर्तक मानकर साधना करते हैं। ऐसी मान्यता है किपंथ के आपसी मतभेद कभी–कभी झगड़े का स्वरूप ले लेते थे तो गोरखनाथ जी ने इस समस्या को जड़ से समाप्त करने के लिए ही 12 पंथ में नाथ संप्रदाय को विभक्त कर दिया था 12 पंथो का जो विभाजन किया गया उसमें भी ऐसी मान्यता सामने आती है कि शिव द्वारा स्थापित 12 पंथ तथा गोरखनाथ द्वारा विभक्त 12 पथ इन दोनों में विभिन्न मत मंतन्तरो के कारण आपसी झगड़े होते थे इसीलिए गोरखनाथ जी ने 6 पंथ शिव जी द्वारा स्थापित तथा 6पंथ अपने द्वारा स्थापित इन दोनों को मिलाकर एक पंथ का निर्माण किया वह पंथही 12 पंथी शाखा जो आज वर्तमान में देखी जा रही है, उसका निर्माण हुआ। वर्तमान की 12 पंथी शाखा का विभक्तिकरण इस प्रकार देखा गया हैः

1. भुज के कठरनाथ
2. पेशावरएवं रोहतक के पागलनाथ
3. अफगानिस्तान के रावल
4. मंख या पंक
5. भारवाड़ के वन
6. गोपाल या राम के पंथ
7. आईपंथ के चोलीनाथ
8. हेठ नाथ
9. चाद नाथ कपियानी
10. भारवाड़ का बैराग पंथ
11. धजनाथ महावीर
12. जयपुर के पावनाथ

यह मान्यता है कि इससे पहले 6 शिव द्वारा स्थापित तथा बाद के 6 गोरखनाथ जी द्वारा स्थापित शाखाएँ थी इन दोनों को मिलाकर बारह पंथी शाखा की स्थापना हुई और मुख्य संस्थापक गोरखनाथ जी थे।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नाथ पंथ सम्प्रदाय मुख्यतः गोरखनाथ जी द्वारा स्थापित किया गया था। गोरखनाथ शाखा में दो प्रकार के साधु देखने को मिलते है।

1. कनफटा साधु
2. ओघड़ साधु

कानफाड़ कर जो मुद्रा धारण करते हैं वे साधु कनफटा साधु कहलाते है और जो साधु कान चीर कर मुद्रा धारण नहीं करते हैं वह ओघड़ साधु कहलाता है। इस प्रकार नाथ पंथ में साधुओं की दो श्रेणियाँ प्रतिष्ठित है पहला कनफटा और दूसरा ओघड़। जिस साधु ने कानफाड़ कर मुद्रा (कुण्डल एवंदर्शन) धारण की हुई है तो नाथ पंथ में यह माना गया है कि उस साधु ने ब्रह्म सक्ष साक्षात्कर कर लिया है। यहीं कारण है कि नाथ पंथियों ने कनफटा साधुओ को सम्मान देते हुए उन्हें ओघड़ से सर्वोच्च माना और उन्हें यह सम्मान दिया कि ओघड़ साधु उन्हें सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ के रुप में उनका आदर मान करे। कनफटा साधुओं को भी यह अधिकार दिया गया है कि वे ओघड़ साधुओ से सम्मान प्राप्त करने के अधिकारी है। कनफटासाधुओ को भी यह अधिकार दिया गया है कि वे ओघड़ साधुओं से सम्मान प्राप्त करने के अधिकारी हैं। कनफटा साधु पूजनीय साधुओं की श्रेणी में शामिल है औघड़ साधुओं को इस पूजनीय श्रेणी में स्थान नहीं दिया गया है।
नाथ पंथ विश्वव्यापी है इसका विस्तार भारत से बाहर नेपाल तिब्बत, पाकिस्तान के मक्का मदीना तक देखा गया है। गोरखनाथ जी ने नेपाल तथा तिब्बत के देशों में तपस्या की थी तो चौरंगीनाथ जी ने भी तिब्बत तथा मक्का मदीना तक अपनी तपस्या का विस्तार किया था। इन देशों में नाथ पंथ के मठ एवं पवित्र साधना स्थल आज भी विद्यमान है।
भारत में सम्पूर्ण भारत अर्थात् भारत के लगभग सभी राज्यो में नाथ पंथ का विस्तार देखा जा सकता है।12 पंथो में विभक्त नाथ सम्प्रदाय के मठ तथा अनेक महापुरुषों की तपस्थली देखी जाती है।
नाथ पंथियो की मुख्य साधना स्थली भारत के उतराखण्ड राज्य में हरिद्वार तथा उत्तर प्रदेश राज्य के गोरखपुर में गोरखनाथ मन्दिर है। पश्चिमी भारत में गोरखनाथ शाखा के साधुओं को धर्मनाथी तथा अन्य भाग में कनफटा था गोरखनाथी नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है।
नाथ पंथ विभिन्न नाम जैसे योगी सम्प्रदाय, सिद्ध सम्प्रदाय तथा कौल मत एवं अवधूत मत से भी प्रसिद्ध है। इसका तात्पर्य यह है कि नाथ पंथ तथा उक्त सभी सम्प्रदाय/मत ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। अवधूत सम्प्रदाय में अवधूत शब्द का अर्थ लिया जाता है" स्त्री रहित या माया प्रपंच रहित। "सिद्ध सिद्धान्त पद्धति नामक नाथ सम्प्रदाय के ग्रन्थ में एक श्लोक के माध्यम से अवधूत शब्द का अर्थ इस प्रकार बताया गया है" सर्वानप्रकृति विकारण वधु नोतीत्य अवधूत" अर्थात् जो समस्त प्रकृति विकारों को त्याग देता है या झाड़ देता है वह अवधूत है।
बौद्ध तथा जैन धर्म के सन्तो के नाम के आगे भी नाथ शब्द का प्रयोग किया है। जैन धर्म में कुछ सन्त जैसे भीननाथ और पारस नाथ इनके नाम के आगे नाथ शब्द को जोड़ा गया है। मत्स्येन्द्रनाथ जी के समय जो चार सम्प्रदाय थे, ये दोनों ही सन्त उस समय के नाथ सन्तों की सूचि में देखे जाते है। लेकिन ये कनफट साधुओं की तरह कुण्डल तथा वेशभूषा धारण नहीं करते हैं और ना ही हठ योग साधना का पालन करते हैं वर्तमान में भी देखा ज सकता है कि सभी जैन सन्त महावीर को भगवान मानते हैं और भगवान महावीर की शिक्षा का ही प्रचार प्रसार करते हैं, अब उनके नाम के साथ नाथ शब्द भी नहीं जोड़ा जाता है।

नाथ पंथ की 12 शाखाएं

नाथ पंथ में गोरखनाथ द्वारा जो बारह शाखाए स्थापित की गइ थी उनको बारह–पंथी काह गया। बारह पंथी विस्तार से इस प्रकार वर्गित की जाती है।

सतनाथ पंथ

ब्रह्मा जी को इस पंथ का प्रर्वतक माना गया है। मान्यता यह है कि सत्यनार्थ ही सतनाथ पंथ के प्रर्वतक हैं। संतनाथ पंथ के मानने वाले सन्तो को ब्रह्म योगी कह कर सम्बोधित किया जाता है क्योंकि यह धारणा रही है कि ये ब्रह्म को अपना ईष्ट मानते है तो ये ब्रह्म योगी है। उड़ीसा के भुवनेश्वर नामक स्थान पर सतनाथ पंथ की प्रधान पीठ है। सतनाथ पंथ संख्या में 31 है।

रामनाथ पंथ

श्री रामचन्द्र जी रामनाथ पंथ के प्रर्वतक है। गोरखपुर जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश राजय में स्थित है, वहाँ रामनाथ पंथ की प्रधान पीठ है। रामनाथ की संख्या 61 है।

धर्मनाथ पंथ

इस पंथ के प्रर्वतक धर्मराज युधिष्ठिर को माना गया है। धर्मनाथ पंथ की मुख्य पीठ दुल्लुदेलक नामक स्थान पर है, यह स्थान नेपाल में स्थित है। धर्मनाथ पंथ की संख्या 15 है। भारत में भी इस पंथ की पीठ हे जो कि कच्छ के घिनोधर नामक स्थान पर स्थित है यह गुजरात राज्य के अन्तर्गत आता है।

लक्षमणनाथ पंथ

लक्षमणनाथ पंथ को ही नाटेश्वरी पंथ भी कहा जाता है। इस पंथ का प्रवर्तक लक्षणम ही को माना गाया है।

लक्षमणनाथ पंथ का मुख्य स्थान पंजाब के गोरर्खाटल्ला (झेलम) में है। लक्ष्मणनाथ पंथ का समबन्ध दरियानाथ पंथ तथा दुलनाथ पंथ से भी बताया जाता है। लक्ष्मण नाथ पंथ संख्या में 43 है।

दरियानाथ पंथ

इस पंथ के भूल प्रर्वतक गणेश जी माने गए है दरियानाथ पंथ का नाम कन्हड़ पंथ पड़ गया जिसके पीछे यह मान्यता कि दरियानाथ पंथ के विषय में गोरखपुर में सुनी परम्परा से इसका नाम कन्हड़ पंथ पड़ा है। कच्छ को मानफरा इसका प्रधान स्थान रहा, ये संख्या में 10 माने गए है।

गंगानाथ पंथ

इस पंथ का भूल प्रर्वतक भीष्म पितामह को माना गया है। मुख्य पीठ जखबार नामक स्थान है जोकि पंजाब राजय के जिला गुरूदासपुर में आता है। इस पथ की संख्या 6 है।

वैराग पंथ

इस पंथ के संस्थापक भर्तृहरि जी माने गए है। राजस्थान के नागौर में रातादुंढा नामक स्थान में इस पंथ की प्रधान पीठ है। इस पंथ का सम्बन्ध भोतंगीनाथ पंथ से भी बताया जाता है। इनकी संख्या 124 है।

रावल या माननाथ पंथ

गोपीचन्द जी माननाथ पंथ के मुख्य प्रवर्तक थे। आज इस पंथ की पीठ राजस्थान प्रदेश के जोधपुर के महामन्दिर नामक स्थान पर बताई गई है। भाननाथ पंथ की संख्या 10 है।

जालंघरिया पंथ/पागल पंथ

पागलपंथ के संस्थापक चौरगीनाथ को माना गया है। ..... पागलपंथ की पीठ हरियाणा के रोहतक जिले के अस्थल बोहर नामक स्थान पर है। चौरगीनाथ जी को ही पूरण भगत कहा गया है। इनकी संख्या 4 है।

आई पंथ

गुरू गोरखनाथ जी की शिष्या भगवती बिमला देवी थी, वह आई पथ की मूल प्रवर्तिका थी। आई पंथ की मुख्य पीठ ..... स्वं हरिद्वारा में स्थित है। बंगाल में दिनाजपुर जिले में जोगी गुफा में मुख्य पीठ है। यह जोगी गुफा गोरखकुई के नाम से भी प्रसिद्ध थी। मस्तनाथ जी से पूर्व आई पंथ से सम्बन्धित साधु अपने नाम के पीछे आई शब्द का प्रयोग करते थे लेकिन मस्तनाथ जिनके गुरू नरमाई नाथ रहे, उन्होंने अपने नामक साि आई के स्थान पर 'नाथ' शब्द का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया था। उसके बाद से आई पंथ के सभी सन्तों ने आई शब्द के स्थान पर नाथ शब्द अपने नाम के बाद जोड़ना प्रारम्भ कर दिया जो आज तक प्रचलित है। आई पंथ का सम्बन्ध घोड़ा चौली से भी जोड़ा जाता है। इनकी संख्या 10 है।

कपिलानी पंथ

गढ़वाल के राजा अजयपाल ने कपिलानी पंथ की स्थापना की थी। कपिल मुनि कपिलानी पंथ के मुख्य प्रवर्तक बताए गए है। बंगाल में गंगानगर नामक स्थान है जो इस पंथ का प्रधान स्थान है। इस पथ की एक अन्य पीठ कोकलकता के समीप दमदभ गोरखवंशी स्थित है। इनकी संख्या 26 मानी गई है।

धजनाथ पंथ

हनुमान जी इस पंथ के मूल प्रर्वतक माने जाते है। वर्तमान में धजनाथ पंथ की पीठ अम्बाला में स्थित है। इस पथ की संख्या 3 है।

आगेन्दल कर ये 12 पंथ भी अनेक उपशाखाओं में विभकत हो गया। जैसे पायलनाि कायिकनाथी उदयना थी, आचारपंथ चर्पटनाथी, फीलनाथी गैनी, निरंजननाथ वरजोगी, नायरी कापाय, उर्धनारी कामभज अमरनाथ वरजोगी, नायरी का पाय, उर्धनारी कामभज, अमरनाथ, पाद्थ, अमापंथी तारकनाथ, कभीदास भृंगनाथ, अभापंथी आदि। समपूर्ण भारत वर्ष में इनका विस्तार देखा जाता है।

साराशतः उक्त विवरण को आधार बनाकर यह कहा जा सकता है कि नाथ पंथ को प्रवर्तन किया उन्होंने नाथ पंथ को बारह पंथ/शाखाओं में विभक्त कर, एक साथ इन बारह शाखाओं को सम्मलित कर नाथ पंथ को सगंठित किया। ऐसी धारणा हे कि गोरखनाथ ने नाथ पंथ का बारह शाखाओं में विभाजित करके संगठित रूप देते समय छः शाखाएं शिव पंथ के समय और छः शाखाएं गोरखपंथी की एक साथ रखी ताकि एक साथ चल कर नाथ पंथ एक मजबूत सम्प्रदाय बन कर योग का प्रचार–प्रसार तथा लोक कल्याणकारी कार्य कर सके। यह सत्य हे कि इन बारह पथों के अपने–2 गुरु है अपने–2 सिद्ध स्थान है अपने–2 मठ है अपने–2 गुरुओं की तपोभूमि है लेकिन फिर भी ये 12 पंथी गोरखनाथ के अनुयायी है, गोरखनाथ की साधना पद्धति (हठ योग) द्वारा साधना करते है, और गोरखनाथ को अपना गुरू, नाथ पंथ का संस्थापक मानते है। नाथ पंथी यह कहते है कि उनका गुरु गोरखनाथ है उनका मुख्य ग्रन्थ (हठयोग प्रदिपिका) नाथ ग्रनी है, गोरक्ष सिद्धान्त पद्धति है और वे हठ योग द्वारा अपनी साधना करते है।

नाथ पंथ योगियों का मुख्य उद्देश्य हठ योग साधना के द्वारा आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करना है।

नाथ पंथी हठ योगी पंथ है, साधना यात्रा में योग से जो सिद्धि प्राप्त होती है उसका प्रयोग ये नाथ पंथी जन कल्याण तथा लोकल्याण में करते हैं, जन–जन को स्वास्थ्य की मजबूती कैस हो इसकी जागरूकता प्रदान करते है। इतिहास में प्रमाण है कि किस प्रकार गोरखनाथ चौरगीनाथ मस्तनाथ आदिनाथ पंथ योगियों ने अपनी योग तपस्या से प्राप्त सिद्धियों की जनकल्याण

कार्यो में प्रयोग किया है। किसी प्रकार तत्तकालीन समय में इन सिद्ध नाथ योगियों ने आम जनता को भयानक रोगों से मुक्ति का मार्ग दिखाया था। उदाहरणार्थ मठ, अस्थल बोहर की जनश्रुतियाँ इस उक्त बात का प्रमाण है। जन श्रुतियाँ सत्य पर आधारित है, जन श्रुति हमें हमारे पूर्वजों से सुनने को मिली जो सत्य घटनाएं थी। पीढ़ी दर पीढ़ी चलते –2 एक समय वे जनश्रुति बन गई लेकिन उनकी सत्यतता पर तनिक भी संदेह नहीं किया जाना चाहिए।

COVID-19 और नाथ पंथ के बारह पंथियों की चर्चा करते समय यह कहना बिल्कुल सत्य है कि पहले भी कर रहे थे और आज भी अपने शिष्यों की यह जागरूकता दे रहे है कि योग का जीवन का अंग बनाए, क्यों योग शरीर को मजबूती प्रदान करता है, शारीरिक मजबूती के साथ–2 मानसिक मजबूती योग द्वारा प्राप्त की जाती है कहने का तात्पर्य है कि ये बारह पंथी योग का आधार बनाकर कोरोना वायरस से मजबूती प्रदान करने की जागरूकता पंदान कर रहे है, यह शारीरिक पुष्टता आम जनता को कोरोना वायरस से लड़ने की क्षमता प्रदान कर रही है, संकट की इस घड़ी में नाथ पंथी (आई पंथ) की सिद्ध पीठ मठ, बाबा मस्तनाथ (अस्थल बाहर मठ) जो कि रोहतक जिले में स्थित है वह Immunity Booster बनाकर प्रधान मन्त्री कोष में आर्थिक मदद दे कर बाबा मस्तनाथ आयुर्वेद महाविद्यालय (जोकि हरियाणा का सबसे पुराना आयुर्वेद महाविद्यालय कहलाता है।) को COVID-19 अस्पताल की श्रेणी बद्ध करवा जनता की सेवा का कार्य कर रहा है कोरोना काल में जनमानस को बिचलत होने से रोक रहा है। बाबा मस्तनाथ मठ ने अपने यहाँ कोरोनटाइन केन्द्र बना कर यह साबित कर दिया है कि वह राष्ट्र सेवा में अग्रणी कार्य कर रहा हे, देश–विदेश से आए लोगों को इस कोरोनटाइन केन्द्र में रखा और उनकी सभी तरफ से देख रेख की जो कि इस कार्य को स्थापित करता है कि नाथ योगी हठ योग से तपस्या और लोककल्याण कार्य करते रहे है। वर्तमान में मठ अस्थल बोहर की गद्दी पर स्थापित बालकनाथ योगी की संवेदनशीलता अतुलनीय एवं स्मरणीय रहेगी। इनके पीठासीन काल का यह जन कल्याणकारी कार्य इतिहास ऐप–ना में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बनर्जी, अक्षय कुमार फिलोस्फी ओफ गोरखनाथ, प्रकाशक मेहन्त दिगविजय नाथ ट्रस्ट, गोरखनाथ मन्दिर गोरखपुर मुद्रक, नवचेतन प्रैस, नया बाजार, दिल्ली–6, 29–10–1961
2. श्री वीरनाथ जी (आई पंथ) श्री नाथ चरित, 14 जनवारी, 2013 प्रकाशक अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा, गुरू गोरखनाथ मन्दिर अखाड़ा, अपर रोड़, हरिद्वार (उतरांचल)
3. विसालनाथ योगी, श्री नाथ सिद्धों की ऊँकार सिद्धि (उपासना–साधना) 15 जनवरी, 2019 (द्वितीय संस्करण) प्रकाशक श्री बाबा मस्तनाथ मठ, अस्थल बोहर, जिला रोहतक हरियाणा।
4. भंभूलनाथ योगी, योगी सम्पद्राय निम्य कर्म संचय, 15 जनवरी, 2019 (तृतीय संस्करण) प्रकाशक बारह पंथ योगी महासभा, गोरखनाथ मन्दिर, हरिद्वारा उतंराचल
5. शेखर सन्तोष, गुरू गीता (Complied by) प्रकाशन, 2001, Dev Publication, ग्रीन पार्क एक्सटेशन, N.D. 16.
6. आचार्य राधाकृष्ण, ध्यान साधना के प्रयोग, मई, 2015 प्रकाशक, अमित पॉकेट बुक्स, जालन्धर, मुद्रक योजना प्रिंटिंग प्रैसे, जालन्धर
7. नान्दल डॉ0 सौभाग्यवती, नागेपीर तपस्वी रणपत–मानधाता, प्रकाशक महन्त चांद नाथ योगी मठ, अस्थल बोहर, रोहतक, 17 मार्च, 2007
8. शर्मा, शिवानी, चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत) प्रकाशक महन्त चांदनाथ योगी महन्त, अस्थल बोहर, रोहतक हरियाणा 27 फरवरी, 2015 ई0 (द्वितीय संस्करण)
9. योगी विलास नाथ, श्री नाथ सिद्धों की शंखढ़ाल (श्री नाथ रहस्य चतुर्थ खण्ड) प्रकाशक अस्थल बोहर मठ, रोहतक हरियाणा 27 जुलाई, 2018
10. आहुजा एवं श्रीवास्तव, भारत का गौरव, प्रकाशक मन्त चांदनाथ योगी, गद्दी मठ, अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा) फरवरी, 2009
11. विलासनाथ योगी नव नाथ (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार बिधि) 15 जनवरी, 2019, प्रकाशक बाबा मस्तनाथ मठ अस्थ्ल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा
12. योगिश्वर श्री शंकरनाथ श्री मस्तनाथ चरित, प्रकाशक महन्त चांदनाि योगी, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक
13. योगी शंकरनाथ, श्री मस्तनाथ चरित (द्वितीय संस्करण 14 जनवरी, 2013) प्रकाशक, बारह पन्थ योगी महासभा गुरु गोरखनाथ मन्दिर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड योगी शंकरनाथ।
14. योगी विलासनाथ, श्री नाथ सिद्ध कवचम् (चतुर्थ संस्करण) 15 जनवरी, 2019, प्रकाशक बारहपंथ योगी महासभा गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर, हरिद्वार उत्तराखण्ड।
15. योगी सिद्ध श्री शंकरनाथ अस्थलबोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास सम्पादन कोकचन्द्र शास्त्री, प्रकाशक मेहन्त श्रेयोनाथ योगी, अस्थल बोहर (रोहतक) हरियाणा राज्य 1970 ई0 मुद्रण सम्राट आर्ट ऑफसेट प्रैस, हाडी धीरज, दिल्ली–6
16. योगी विलासनाथ श्री नाथ सम्प्रदाय के तीर्थ स्थल एवं प्राचीन भर्तृहरि गुफा महात्म्य 18 अगस्त, 2015 प्रकाशक, 12 पंथी योगी महासभा हरिद्वार।
17. योगी चन्द्रनाथ माया मिली ना राम, 1958, प्रकाशन, मठ अस्थल बोहर, रोहतक, हरियाणा भुपंज टयोमा आफसेट, प्रैस ओखला, दिल्ली
18. योगी विलासनाथ, श्री नाथ रहस्य (खण्ड 1–2–3) 10 जुलाई 1917 ई0 प्रकाशन, बारह पंथ योगी महासभा, गोरखनाथ मंदिर, हरिद्धार
19. श्री मस्तनाथ चरितम् 1970 ई0 प्रकाशक श्रीमन्त श्रेयोनाथ महाभागा : अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)
20. योगीराज पं0 श्री गड्.गनाथः, सिद्धपुर वाड़ा कुटी, पो0 गान्धरा, जालन्धर पंजाब, संवत 1960, मुद्रक सम्राअ प्रेस पहाड़ी धीरज दिल्ली–6
21. भर्तृहरि कृत नीतिशतकम् अनुवादक, स्वामी विदेहत्मानन्द प्रकाशक, स्वामी ब्रह्मस्थानन्द, अध्यक्ष रामकृष्ण मठ, धन्तोली, नागपुर, 20.3.2014